भारत स्वातन्त्र्य स्वर्णजयन्ती ग्रन्थमाला-15

# काव्य और भाषा : उनके शास्त्र सन्दर्भ

मुनीश्वर झा

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

भारत स्वातन्त्र्य स्वर्णजयन्ती ग्रन्थमाला—15

# काव्य और भाषा :
## उनके शास्त्र-सन्दर्भ

मुनीश्वर झा

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

1998

# विषय-सूची


पुरोवाक् iii

आभार-ज्ञापन v

**अध्याय १**

विषयावतरण—भाषा और काव्य १

**अध्याय २**

भाषा और शब्दार्थ-विवेचन ११

**अध्याय ३**

भारतीय काव्य-चिन्तन; रस और भाव ३८

**अध्याय ४**

काव्य के उत्कर्षक और अपकर्षक ७८

**अध्याय ५**

संस्कृत-काव्यशास्त्र के काव्यवाद : ध्वनि और वक्रोक्ति ११५

**अध्याय ६**

काव्य का भाषिक निरूपण

उन्होंने देखा-चिरकुमारी उषा अपने अधखुले उरोजों के लावण्य को नर्तकी की तरह सब के सामने प्रकट करती है। प्राची के प्राङ्गण में सद्य: स्नाता-सुन्दरी-सी खड़ी है। आलोक-वस्त्र में लिपटी उषा पूर्व दिशा में उदीमयान होकर अपने सौन्दर्य के घूँघट को उघारती है।

उषस्, सवितृ, पृथ्वी आदि सूक्तों में जीवन के रागात्मक पक्षों का मनोरम वर्णन स्थल-स्थल पर प्राप्त है। वहां काव्य-रस माधुरी की ऐसी धारा प्रवाहित होती है, साथ ही एक अभिनव शान्ति मिलती है। हृदय आनन्द में नाचने लगता है।

वेद में भाव-सौन्दर्य भी है। प्रकृति-सौन्दर्य के अवलोकन से वैदिक ऋषियों को परमानन्द हुआ। भावना के साथ चिन्तन उत्पन्न हुआ। एक ऋषि में जिज्ञासा जागी-जिसने उस द्युलोक को स्थिति रूप दिया, जिसने पृथ्वी लोक को, स्वर्गलोक को तथा व्योम लोक को स्थिर किया, जो अन्तरिक्ष लोक में व्याप्त है, उस देव को छोड़ कर किसका पूजन करूँ?

**येन द्यौरुग्रा पृथ्वी च दृल्हा**
**येन स्वस्तभितं येनाकः।**
**योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः**
**कस्मै देवाय हविषा विधेम?**[१]

अथर्व के दार्शनिक कवि को इस प्रश्न का समाधान मिला। उसकी दृष्टि में सत् देव ही है। वही उपास्य है। एतदर्थ पैप्पलाद संहिता के चतुर्थ काण्ड के प्रथम अनुवाक का मन्त्र है :

**हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे**
**भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**
**स दाधार पृथिवीं द्यामुतामूं**
**तस्मै देवाय हविषा विधेम॥**[२]

---

१. ऋग्वेद–१०-१२-५

२. अथर्ववेद– ४-१-१

# राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058